★ आवश्यक विधि ★

प्रकाशक

जोधपुर निवासी श्रीयुत किशोरमलजी खिंवसरा की
धर्मपत्नी अखंड सौभाग्यवती श्रीमती
मंदा कुमारीजी दत्त द्रव्य से

पारख हुकमचन्द्र जैन

मन्त्री श्रीजिनहरिसागर सूरि जैन ज्ञान भण्डार

लोहावट जाटावास (मारवाड़)

द्वितीयावृत्ति ३०००

वि० सं० २००४] मूल्य ।=) [वीर सं० २४७४

❀ धन्यवाद ❀



अवश्य करने योग्य—आवश्यक विधि नाम की इस पुस्तिका ...ज्येश्वर आचार्य देव श्री श्री १००८ श्री मज्जिनहरिसागर सूरीश्वरजी ...राज साहब के शिष्यरत्न श्रीमान् हर्षप्रभसागरजी महाराज साहब ने ...हीत की। इसकी १००० प्रतियां छपवाने में द्रव्य सहायता देने वाले ...नुभाव धन्यवाद के पात्र हैं।

मुनि प्रेमसागर

अर्हं नम

॥ श्री सुखसागर भगवज्जिन हरि पूज्य गुरुभ्यो नम ॥

०(आवश्यक विधि)०

अवश्य करने योग्य–'आवश्यक विधि' नाम की
पुस्तक भव्यात्माओं के हितार्थ
प्रस्तुत की जाती है।



णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहुण, एसो पच णमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मगलाण च सव्वेसिं, पढम हवइ मगल ॥

भावार्थ—श्री अरिहतदेव, सिद्ध भगवान, आचार्य महाराज, उपाध्याय महोदय और ढाई द्वीपमें वर्तमान सब साधु महात्मा इन पाच परमेष्ठियों को मेरा नमस्कार हो। परमेष्ठियों को किया हुआ नमस्कार सब पापों को नाश करता है और सब प्रकार के मगलों में प्रधान मगलरूप है। इसलिये आत्माओं को विधि पूर्वक नवकार मत्र का जाप हमेशा करना चाहिये।

॥ सामायिक लेने की विधि ॥

सामायिक लेने वाले श्रावक और श्राविकाएँ शुद्ध वस्त्र पहनकर उपाश्रय में पौषध शाला में, घर शाला में अथवा घरकी एकान्त और शांत जगह में चौकी या ठवणी की प्रमार्जना कर उसपे श्री स्थापना जी पुस्तक या नवकार वाली रखकर स्थापित करें। "श्री स्थापनाजी की प्रतिष्ठा के निमित्त ३ नवकार गिनें। "श्री स्थापनाजी' की १३ बोल से पडिलेहना करें।

॥ श्री स्थापनाजी के १३ बोल ॥

१–शुद्ध स्वरूप धारू २–ज्ञान ३–दर्शन ४–चारित्र सहित ५–सद्दहणा शुद्धि ६–प्ररूपणा शुद्धि ७–दर्शन शुद्धि सहित ८–पांच आचार पालू ९–पलावु १०–अनुमोदु ११–मनोगुप्ति १२–वचनगुप्ति १३–काय गुप्ति आदरू।

पश्चात् श्री गुरु महाराज को या गुरु स्थानीय श्री को वन्दन करने के लिए तीन "खमासमण" दें।

॥ खमासमण (गुरुवन्दन) ॥

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए मत्थएण वदामि ।

भावार्थः—हे क्षमाशील गुरु ? मैं सब पापों का निषेध करके शक्ति के अनुसार आपको वन्दन करना चाहता हूं। इसी शुभ भावना से प्रेरित हो सिर झुकाकर वन्दन करता हूं।

बाद में श्री गुरु महाराज को इस प्रकार सुख साता पूछनी चाहिये ।

॥ सुख पृच्छा पाठ ॥

इच्छकार भगवन् ! सुहराई सुहदेवसि सुख तप शरीर निराबाध सुख संयम यात्रा निर्वहते होजी स्वामिन् साता है ? आहार पानी का लाभ दीजियेगा ।

भावार्थ —हे भगवन् ! मैं मानता हूं आपकी रात्रि सुख पूर्वक बीती होगी दिन सुख पूर्वक बीता होगा, तप सुख पूर्वक पूर्ण हुआ होगा, शरीर पीड़ा रहित होगा। संयम यात्रा का निर्वाह आप सुख पूर्वक करते होंगे। हे

गुरो! आपको कुशल है? (सामायिक बिना की अवस्था में) मैं प्रार्थना करता हूं कि निर्दोष आहार पानी को लेकर मुझे "धर्म लाभ" दें।

कुशल प्रश्न के बाद दोनों घुटनों को जमीन पर टेक कर सिर झुकाकर दाहिना हाथ जमीन पर या चरवले पर रखकर बाँये हाथ में मुख के आगे "मुँहपत्ति" लेकर 'अब्भुट्ठियोपाठ' बोले।

॥ अब्भुट्ठियो (गुरुक्षामणा) ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! अब्भुट्ठियोमि अब्भिंतर देवसियं (राइयं) खामेउं। इच्छं, खामेमि देवसियं (राइयं)। जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरि भासाए जंकिंचि मज्झ विणय-परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

भावार्थ—हे गुरो! मुझसे जो कुछ सामान्य या विशेष रूप से अप्रीति हुई हो, इसी तरह आपके आहार

पानी के विषय में विनय-वैयावच्च के विषय में, आपके साथ एक बार बातचीत में, बार बार बातचीत में, आपसे ऊंचे आसन पर बैठने में, बराबर के आसन पर बैठने में, आपके संभाषण के बीच या बाद में बोलने में मुझसे थोड़ा बहुत जो कोई अविनय हुआ हो उसकी मैं माफी चाहता हूँ ॥

इस प्रकार गुरु वचन करके एक खमासमण देवे और "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुहपत्ति पडिलेहु ?" इच्छं कहकर उकडू बैठकर मुहपत्ति की पडिलेहना करे। मुहपत्ति पडिलेहन करके खमासमण देकर कहे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुँ" इच्छं, दूसरी बार खमासमण देकर 'इच्छाकारे" संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं"। इच्छं। बादमें खड़ा होकर आधा अंग नमाकर तीन नवकार गिने। बाद में "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी सामायिक दण्डक उच्चरावोजी' । (ऐसा कहे बाद गुरु महाराज हों तो उनसे या अपने से बड़े सामायिक धारी से अथवा अपने आप तीनबार) "करेमिभंते" का उच्चारण करे ।

॥ करेमिभंते सामायिक सूत्र ॥

... सामाइयं सावज्जं जोगं

तावनियम पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

भावार्थ—हे भगवन् ! मैं सामायिक राग-द्वेष का अभाव और ज्ञान दर्शन-चारित्र का लाभ स्वीकारता हूं। इसलिये पाप वाले व्यापार को मैं त्यागता हूं। जब तक मैं इस नियम का पालन करता हूं तब तक मन वचन और शरीर इन तीन साधनों से पाप व्यापारों को न स्वयं करूंगा और न दूसरों से कराऊंगा। हे गुरु ! इस प्रतिज्ञा के साथ मैं मानसिक कायिक और वाचिक पाप व्यापारों से पीछे हटता हूं। हृदय से उनको बुरा समझता हूं। आपके सामने उनकी निन्दा करता हूं और इस प्रकार मैं अपनी आत्मा को पापों से छुड़ाता हूं।

इस प्रकार तीनबार "करेमिभंते" उच्चारण के बाद एक खमासमण देवे और गमना गमन में होने वाली जीव हिंसा के पाप से छूटने को 'इरिया वहिया' करे।

॥ इरियावहिया सूत्र ॥

इच्छा कारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडि-

क्कमामि। इच्छ, इच्छामि पडिक्कमिउ। इरियावहियाए विराहणाए, गमणा गमणे, पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा-उतिंग-पणग दग मट्टी मक्कडा सताणा, सक्रमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया पचिंदिया अभिहया, वत्तिया, लेसिया, सघाइया, सघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणा ओ ठाण सकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड।

भावार्थ —हे भगवन्! इच्छा पूर्वक आज्ञा दीजिये, ताकि मार्ग में चलने फिरने आदि से जो जीव विराधना होती है। उससे तज्ज य अतिचारों से मैं निवृत्त होऊ। भूत काल में गमना गमन करते हुए मैंने किसी प्राणी को व्था करके बीज हरितवनस्पति, ओस का जल, चींटी के बिल, पाचरग की काई, पानी, मिट्टी, मकड़ी के जाले इत्यादि को कुचल करके जो कोई एक इन्द्रिय वाले दो इन्द्रिय वाले तीन इन्द्रिय वाले चार इन्द्रिय वाले और पांच इन्द्रिय वाले जीवों को पीड़ित किये हों चोट पहुचाई धूल आदि से ढके हों, आपस म या किसी पदार्थ से

हों, इकट्ठे किये हों, छुए हों, कष्ट पहुंचाया हो थकाये हों, हैरान किये हों, एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखे हों, अधिक क्या किसी भी तरह से जानते अजानते जीवितव्य से अलग किये हों तो उस पाप के लिये मैं हृदय से पछताता हूं। मेरा वह पाप निष्फल हो जाय बस मैं इतना चाहता हूं।

॥ तस्स उत्तरी सूत्र ॥

तस्स उत्तरी करणेण पायच्छित्त करणेण विसोही करणेण विसल्ली करणेण पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग।

भावार्थ —ईर्यापथिकी क्रिया से जीव विराधना जन्य पाप की शुद्धि पश्चात्ताप द्वारा की। अब उसी की विशेष शुद्धि प्रायश्चित्त के द्वारा परिणाम की विशुद्धि के द्वारा शल्यों के त्याग द्वारा करनी जरूरी है। शल्यों का त्याग और पाप कर्मों का नाश काउसग्ग से हो सकता है। इस लिये मैं काउसग्ग करता हूं।

तस्स उत्तरी के बाद अन्नत्थ कहे।

॥ अन्नत्थ उससिएण सूत्र ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण भमलिए, पित्त मुच्छाए, सुहुमेहिं अग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठी संचालेहिं, एव माइ एहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्जमे काउस्सग्गो जाव अरिहंताण भगवंताण, णमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

भावार्थ – श्वास के लेने निकालने से, खासने से, छींकने से जमाइसे, डकार से अधो वायु के निकलने से, सिर चकराने से पित्त विकार की मूर्छा से, सूक्ष्म-अंग-संचालन से, कफ के संचालन से, दृष्टि-संचालन से ऐसे ही दूसरे आगारों से अन्य क्रियाओं द्वारा मेरा काउसग्ग अभग है। जब तक मैं "णमो अरिहंताणं" शब्द से अरिहंत भगवंतों को नमस्कार करके काउसग्ग पूर्ण न करू तब तक स्थिर रहकर मौन रहकर, ध्यान के द्वारा अशुभ व्यापारों से अपने शरीर को अलग करता [illegible] ।

अप्पाठ्य के बाद एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना "णमो अरिहंताण" कहकर काउस्सग्ग पाकर प्रकट लोगस्स कहे।

॥ लोगस्स सूत्र ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवलि ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं, जिणंच चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस-वासु पुज्जंच। विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जर मरणा चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइ-च्चेसु अहियं पयासयरा। सागर वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं ॥७॥

भावार्थ—लोक में उद्योत करने वाले, धर्मतीर्थ की स्थापना करने वाले, रागद्वेष को जीतने वाले—चउवीस तीर्थंकरों का मैं स्तवन करूंगा। श्री ऋषभदेव स्वामी श्री अजितनाथ स्वामी, श्री सम्भवनाथ स्वामी, श्री अभिनन्दन स्वामी, श्री सुमतिप्रभु श्री पद्मप्रभ स्वामी श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी श्री चन्द्रप्रभ स्वामी, श्री सुविधिनाथ स्वामी श्री शीतलनाथजी श्री श्रेयांसनाथजी, श्री वासुपूज्य स्वामी श्री विमलनाथजी श्री अनन्तनाथजी, श्री धर्मनाथजी श्री शान्तिनाथजी, श्री कुंथुनाथजी, श्री अरनाथजी श्री मल्लीनाथजी, श्री मुनिसुव्रतजी, श्री नमीनाथजी, श्री नेमिनाथजी श्री पार्श्वनाथजी श्री महावीर स्वामीजी इन चौबीस जिनेश्वरों की मैं स्तुति और वन्दना करता हूं। जिनकी मैंने स्तुति की है, जो कर्म मल से मुक्त हैं जो अजर अमर हैं और जो तीर्थ के प्रवर्तक हैं वे चौबीसों तीर्थंकर मेरे पर प्रसाद करें। जो देवेन्द्रों से भी कीर्तित वन्दित और पूजित हैं जो लोक में उत्तम हैं, जो सिद्ध गति को पाए हैं वे सिद्ध भगवान् मुझको आरोग्य सम्यक्त्व और समाधि का श्रेष्ठ वर देवें। जो चन्द्र किरणों से शांत और निर्मलतर हैं और जो सूर्य किरणों से भी अधिक प्रकाशमान् है जो स्वयंभूरमण नामक महा समुद्र से भी गम्भीर हैं। ऐसे सिद्ध भगवान्

मुझको सिद्धि दें अर्थात् उनके आलम्बन से आरोग्य लाभ सम्यक्त्व समाधि और ममता सिद्धि मुझे प्राप्त हो।



बाद में "खमासमण" देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणो संदिसाहु। इच्छं, कहे फिर 'खमासमण' देकर इच्छा कारेण संदिसह भगवान् बेसणो ठाउं? इच्छं कहकर आसन बिछाकर उसपर बैठकर 'खमासमण' देकर इच्छा कारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहु? इच्छं कहकर "खमासमण देवे और इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं। इच्छं ऐसा कहकर नवकार गिने अगर सर्दी आदि के कारण कपड़ा ओढ़ने की जरूरत हो तो 'खमासमण' देकर इच्छा कारेण संदिसह भगवन् पांगरणों संदिसाहु? इच्छं कहकर फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पांगरणों पडिग्गाहुं? इच्छं कहकर पडिलेहन किया हुआ शुद्ध वस्त्र चद्दर कम्बल आदि ग्रहण करें। बाद में ४८ मिनीट (बड़ी दो घड़ी) तक सज्झाय ध्यान, पठन पाठन, आत्मचिन्तन इत्यादि करें।



❀ इति सामायिक लेने की विधि समाप्त ❀



सामायिक पारने की विधि



सामायिक का समय ४८ मिनिट पूर्ण हो जाय, तब एक "खमासमणा" देकर इच्छा कारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारवा मु पत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कहकर मुहपत्ति पडिलेहन करे। फिर "खमासमण' देकर इच्छा० संदि० भगवन् ! सामायिक पारूं ? यथा शक्ति कहकर एक 'खमा समण' देकर इच्छा कारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारेमि। तहत्ति कहकर आधा अंग नमाकर तीन नवकार विसर्जन मुद्रा से गिने। पीछे घुटने टेक कर सिर नमाकर दाहिना हाथ चरवले पर वा जमीन पर जमाकर भयवदसण्ण भद्दो' का पाठ बोले।

॥ भयव दसण्णभद्दो सूत्र ॥

भयव दसण्णभद्दो, सुदंसणो, थूलभद्द वइरो य। सफलीकय गिह चाया, साहू एवंविहा हुंति ॥१॥ साहूण वंदणेण, नासइ पावं असंकिया भावा। फासुअदाणे निज्जर

अभिग्गहो नाण माईण ॥२॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि समरइ जीवो । जं च न समरामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय,—मसुहं वायाइ भासिय किं चि । असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥४॥ सामाइय पोसह सठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो । सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसार फल-हेउ ॥५॥

सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधि से करते हुए अविधि आशातना लगी हो, दश मनके दश वचन के बारह काया के इन बत्तीस दूषणों में से जो कोई दूषण लगा हो उसका मन-वचन-काया करके मिच्छामि दुक्कडं ।

भावार्थ —श्री दशार्ण भद्र राजर्षि—श्री सुदर्शन श्रेष्ठी श्री स्थूल भद्र स्वामी और श्री वज्र स्वामी ये चारों ज्ञान वान् महात्मा हुए हैं। इन्होंने गृहस्थाश्रम के त्याग के चारित्र पालन से सफल किया । संसार त्याग को करने वाले साधु महात्मा ह हीं वैसे होते हैं । सद्‌विदित भाव से साधुओं को प्रणाम करने वालों के पाप नाश होते हैं । ... प्रासुक आहार पानी देने से निर्जरा हानी है और

ज्ञानादि दिव्य गुणों की प्राप्ति दाती है।। मोहित मन वाला छद्मस्थ जीव क्या याद, कर सकता है।! बहुत थोड़ा। इसलिये जो पाप मुझे याद नहीं आता उसके लिये मैं "मिच्छामि दुक्कड़" मेरा पाप निष्फल हो यह चाहता हू। मैंने जो कुछ मन से अशुभ चिन्तन किया हो। वचन से अशुभ कहा हो और काया से अशुभ काय किया हो उस पाप की निष्फलता चाहाता हू'। सामायिक पौषध में स्थित जीवका जो समय व्यतीत होता है वह सफल है। दूसरा समय और उसमें की हुई क्रियाएं संसार के दु:ख फल की वृद्धि में निमित्त कारण हैं।

[यहां सामायिक के बत्तीस दोषों को विचारे]

॥ सामायिक के ३२ दोष ॥

मन के १० दोष—१ विवेक शुन्य क्रिया करे, २—यश की वांछा करे। ३—धन चाहे। ४—अभिमान करे। ५—भय धारण करे। ६—स्त्री–पुत्र राज्यादि के लिये नियाणा करे। (कि यदि सामायिक का फल हो तो मुझे ये मिलें इस विचारणा को नियाणा कहते हैं)। ७—सामायिक फल में सन्देह करे। ८—क्रोध मान माया

लोभ इन कषायों का सेवन करे। ९-विनय हीन भाव धरे। १०-भक्ति भाव उत्साह पूर्वक न करे। ये मनके दश दोष हैं, सामायिक में इनका त्याग करे।

वचन के १० दोष—१-कुवचन बोले। २-बिना विचारे बोले। ३-किसी पर झूठे आरोप कलंक लगावे ४-जिनागम विरुद्ध बोले। ५-सूत्र पाठ न्यूनाधिक कहे। ६-लड़ाई करे। ७-राजकथा देश कथा स्त्री कथा और भोजन कथा करे। ८-हसी ठठा करे। ९-अशुद्ध पाठ का उच्चारण करे। १०-गुण गुणाता मच्छर की नाई बोले स्पष्ट अक्षर न बोले। वचन के इन दश दोषों का सामायिक में त्याग करे।

काया के १२ दोष— १-पग पर पग चढ़ाकर दुष्ट आसन से बैठे। २-चल आसन से बैठे (रोग आदिक में शरीर को यतना पूर्वक न हीलावे)। ३-चल दृष्टि से इधर उधर देखे। ४-सामायिक में पाप क्रिया करे औरों को इशारे करे। ५-स्तम्भ-दिवार आदि का सहारा

ले बैठ। ६—प्रयोजन विना हाथ पैर हिलावे सकोने और लम्बावे। ७—आलस्य धारण करे। ८—अंगुली आदि अंगोपांगों को मोड़े कड़के निकाले। ९—विना प्रमार्जन किये खुजली खुजावे। १०—गालों पे या सिर पर हाथ टककर चिन्ता तुरके जैसे बैठे। ११—निद्रा लेवे। १२—स्त्री के समान शरीर ढककर बैठे। काया के इन बारह दोषों में से जो कोई दोष लगा हो, उसके लिए "मिच्छामि दुक्कड़" चाहे।

[*सामायिक पारने की विधि समाप्त*]



नोटः—यदि सामायिक में किसी प्रकार से सचित्त वस्तु का संघट्ट हुआ हो तो "इरियावहियं"—तस्स उत्तरी अन्नत्थ" कहकर एक "लोगस्स" या चार नवकार का काउस्सग्ग करे। फिर प्रकट "लोगस्स" कहे।

❀ इति ❀

॥ श्री जिनमन्दिर दर्शन विधि ॥



श्री जिन मंदिर में आने वाले भाविक शुद्ध वस्त्र पहिन कर साथ में चावल, बादाम, मिश्री लड्डू, फल वगैरह नैवेद्य लेकर 'निसीही' कहकर मंदिर के पास पहुंचना चाहिये, वहां पहुंच कर दूसरी "निसीही" कहकर मंदिर में प्रवेश करे फिर तीसरी 'निसीहि" कहकर श्री वीतराग भगवान के दर्शन होते ही झुककर वन्दन करे। फिर स्तुति करे।

॥ प्रभु वन्दना ॥

नाथ निरंजन भव-भय भंजन,
तीन भुवन के हे स्वामि।
वीतराग सुख सागर हे—
भगवान महोदय गुणधामी ॥
अजर अमर पूरण परमातम,

आतम सत्ता विसरामी ।
करता हूं मैं वन्दन तेरे,
चरण कमल में सिर नामी ॥
सुर नर नायक पूज्य प्रभो तू,
पुरुषोत्तम शिव शंकर है ।
बोधि विधाता बुद्ध तुही,
परमातम तू अभयङ्कर है ॥
वाणि अगोचर वर्तन तेरा,
तुही है जग में नामी ।
करता हूं मैं वन्दन तेरे,
चरण कमल में सिर नामी ॥
तेरे ही आदर्शों में हैं,
मोहक मंजुल भाव भरे ।
अयतो ऐसी करदो बस ज्यों,
मेरा भी भव रोग टरे ॥
'श्री हरिपूज्य कवीन्द्र' सुवन्दित,
हो फर तेरा

करता हूं मैं बन्दन तेरं,
चरण कमल में सिर नामी ॥

इत्यादि और भी स्तुतियां कह सकते हैं। ध्यान रखने की बात है कि स्तुति बोलते समय पुरुष प्रभु की दाहिनी तरफ खड़ा रहे और स्त्री बाँई तरफ खड़ी रहे। स्तुति करने के बाद मूल गभारे की दाहिनी तरफ से तीन प्रदक्षिणा लगावें। बाद में पाटे पर (अक्षत) चावल से तीन छोटी ढिगलियें ज्ञान, दर्शन, चारित्र कहते हुए करें। नीचे के भाग में एक साथिया करके ऊपर के आकार में चन्द्रमा की तरह सिद्ध शिला बनाए आड लेवे जैसे—नीचे दीये गये हैं।



॥ साथिया के दूहे ॥

दर्शन ज्ञान चारित्रना, आराधन थी सार।
सिद्ध शिलानी उपरे, हो मुज वास श्रीकार ॥

अक्षतपूजा करता थकां, सफल करूं अवतार।
फल मांगु प्रभु आगले, तार तार मुझ तार ॥
संसारिक फल मांगीने, रखडियो बहु संसार।
अष्ट कर्म निवारवा, मांगू मोक्ष फल सार ॥
चौहु गति भ्रमण संसारमां, जन्म मरण जंजाल।
पंचम गति विण जीवने, सुख नहीं त्रिहू काल ॥

फिर तीन खमासमण हाथ जोड़के खड़े होते हुए और बैठते हुए इस प्रकार करे —

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणीज्जाए निसीहि आए, मथएण वंदामि।

फिर बाया गोड़ा ऊंचा करके नीचे का पाठ कहे —

इच्छा कारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूजी, इच्छं"।

(चैत्यवंदन)

सिद्ध बुद्ध चौवीस जिन, ऋषभ अजित भगवान।
संभव अभिनन्दन सुमति, पद्मसुपास-पहान ॥१

चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल, श्री श्रेयांस – जिनेश ।
वासुपूज्य प्रभु विमल जिन, अनंत धर्म विशेष ॥२॥
शान्ति-कुंथु-अर मल्ली विभु, मुनिसुव्रत-नमि-नेम ।
पार्श्व-वीर "हरि" पूज्यए, नित वन्दु धर प्रेम ॥३॥

(इच्छानुसार और भी नये २ चैत्यवन्दन कह सकते हैं)
बाद में जंकिंचि सूत्र कहे

जं किंचि सूत्र

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालेमाणुसे लोए
जाइं जिण बिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि ।

भावार्थ—(तीर्थ और जिन बिंबों को नमस्कार) स्वर्ग में, पाताल में और मनुष्य लोक में जो भी तीर्थ और जिन-प्रतिमाएं हैं। उनको मैं वंदना करता हूं।

इसके बाद नमोत्थुणं कहें।

॥ नमोत्थुणं सूत्र ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं

मय-सुद्द [illegible]
रिदाण पुरिस [illegible]
हिआण दीव [illegible]
चक्खु-दयाण, [illegible]
धम्मदयाण [illegible]
धम्मवर चाउर [illegible]
धराण विअट्ट [illegible]
बुद्धाण बोहयाण [illegible]
सिव-मयल [illegible]
सिद्धि गइ नाम [illegible]
जिअभयाण । [illegible] सिद्धा, [illegible]
णागए काले । [illegible]

भावार्थ - [illegible]
भगवान ज्ञानवान है । [illegible]
स्थापना करनेवाले है । [illegible]
है । पुरुषों में उत्तम, [illegible]
[illegible], और [illegible]

न वाले हैं। अभय देन वाले हैं। विवेक चक्षु देनेवाले हैं। मुमराहों को राह दिखाने वाले हैं। शरण देनेवाले हैं। सम्यक्त्व देने वाले हैं। धर्म के उपदेशक हैं। नायक हैं, धर्म के प्रचालक हैं। धर्म में श्रेष्ठ हैं। चार गति का अन्त करने वाले समदर्शी हैं। नाश नहीं होने वाले, श्रेष्ठ ज्ञान दर्शन को धारण करने वाले हैं। घाती कर्म के आवरण से मुक्त हैं। स्वयं राग द्वेष को जीतने वाले हैं और दूसरों को जिताने वाले हैं। स्वयं संसार सागर से पार हो चुके हैं और दूसरों को भी पार पहुंचाते हैं। स्वयं ज्ञानी हैं और दूसरों को भी ज्ञान देनेवाले हैं। स्वयं मुक्त हैं दूसरों को छुड़ाने वाले हैं। सर्वज्ञ हैं सर्वदर्शी हैं उपद्रवरहित अचल रोगरहित-अनन्त-अक्षय-व्याकुलता रहित पुनरागमन रहित ऐसे मोक्ष स्थान को पाये हुए हैं। सब प्रकार के भयों को जीतने वाले उन जिनेश्वरों को मेरा नमस्कार हो। जो भूतकाल में हुए हैं। वर्तमान काल में हैं। और भविष्य काल में होंगे। उन सब तीर्थंकरों को मैं वन्दना करता हूं।

इसके बाद नीचे लिखा हुआ सूत्र बोले

। जावंति चेइआइं सूत्र ।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥

भावार्थ —ऊर्ध्वलोक अर्थात्स्वर्ग लोक में अधोलोक अर्थात् पाताल निवासी नागकुमार आदि भवनपतियों में, तिरछा लोक यानि मनुष्य लोकमें जितनी जिनेश्वरों की प्रतिमायें हैं। उन सबको मैं यहां अपने स्थान में रहा हुआ वन्दना करता हूं।

॥ जावन्त के वि साहू सूत्र ॥

जावन्त के वि साहू। भरहेरवय महाविदेहे अ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदण्ड-विरयाण ॥

भावार्थ —५ भरत, ५ ऐरवत, ५ महाविदेह क्षेत्रों में जो मनोदण्ड वचन दण्ड और काय दण्ड से विरक्त यानि अशुभ क्रियाओं को न करने वाले, न दूसरों से कराने वाले और न अनुमोदन करने वाले साधु महात्मा हैं। उन सबको मैं प्रणाम करता हूं।

परमेष्ठिनमस्कार ।

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

भावार्थ —श्री अरिहन्त सिद्ध आचार्य, [illegible] व साधुओं को मेरा नमस्कार हो।

। उवसग्गहरस्तोत्र ।

उवसग्ग हर पास, पास वदामि कम्म-घण-मुक्कं विसहर-विस-निन्नास, मगल-कल्लाण-आवास । विसहर फुलिंग मत, कठे धारेइ जो सया मणुओ तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ-जरा जति उवसामं चिट्ठउ दूरे मतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्ग ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेण जीवा अयरामरठाण ॥४॥ इय सथुओ महायस भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण । ता देव दिज्ज बोहिं भवे २ पास जिण-चद ॥५॥

भावार्थ — सब प्रकार के उपसर्गों को दूर करने वाला पार्श्वनाम का यक्ष जिनका सेवक है। जो कर्मों की राशियों से मुक्त हैं। जिनके स्मरण मात्र से जहरीले सांपों का जहर भी नाश हो जाता है। जो मगल और आरोग्य के आधार हैं। ऐसे भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामी को मैं वन्दन करता हूं। जो मनुष्य भगवान के नाम गर्भित 'विसहर फुलिंग' मत्र को हमेशा कठ में धारण करता है—

अर्थात् पड़ता है उसके [illegible]
भारी और दुष्ट ज्वर है [illegible]
हे भगवन् ! आपके [illegible]
रही सिर्फ आपको [illegible]
देता है, क्योंकि उससे [illegible]
दुःख और दुर्भाग्य नहीं [illegible]
प्राप्य सम्यक्त्व चिन्तामणि [illegible]
प्रभावशाली है। उसे [illegible]
स्थान को प्राप्त करते हैं [illegible]
वाले पार्श्वदेव ! इस प्रकार [illegible]
स्तुति को करके मैं आपसे [illegible]
सम्यक्त्व को-यथार्थ बोध [illegible]

(प्रभु के सामने [illegible]
के स्थान पर [illegible])

। प्रभु [illegible]

तुम्हें नाथ नैया [illegible]
तिरानी पड़ेगी । टेर । [illegible]
डूबत नैया [illegible] पड़ेगी। [illegible]

ओ नैया मेरी, तेरे बिरुद में स्वामी पटेगी। तुम्हें०।
हरि कवीन्द्र की यही विनती है प्रभु। मुक्ति नगरिया
दिखानी पटेगी। तुम्हें० ३।

बाद में दोनों हाथ जोड़कर मस्तक से लगाकर जय वीयराय पढ़े।

। जयवीयरायसूत्र ।

जयवीयराय! जगगुरु! होउ मम तुह पभावओ भयव! भव निव्वेओ मग्गाणु सारिया इट्ठ फल सिद्धि ॥१॥
लोग-विरुद्धच्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थकरणं च। सुह गुरु-जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

भावार्थः—हे वीतराग! हे जगद्गुरो! आपकी जय हो। संसार से वैराग्य, मार्गानुसारिता इष्टफल की सिद्धि लोक विरुद्ध व्यापार का त्याग गुरुओं की पूजा, परोपकार वृत्ति, संयमी साधु गुरुओं का योग, उनके यथार्थ उपदेश में अखण्डित आदर ये सब आपके प्रभाव से मुझे भवोभव में प्राप्त हों। ऐसी प्रार्थना करता हूं।

इसके बाद अरिहंत चेइयाणं का पाठ करे।

। अरिहंत चेइयाणं-सूत्र ।

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदण वत्तियाए, पूअण-वत्तियाए, सक्कार वत्तियाए, सम्माण-वत्तियाए, बोहिलाभ-वत्तियाए, निरुवसग्ग-वत्तियाए, सद्धाए, मेहाए धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

भावार्थ —अरिहंत भगवान की प्रतिमाओं के वन्दन-पूजन सत्कार और सम्मान करने का मुझे अवसर प्राप्त हो, और इन वन्दन आदि क्रियाओं के द्वारा सम्यक्त्व और मोक्ष प्राप्त हो। इस निमित्त से मैं कायोत्सर्ग करता हूं। बढ़ती हुई श्रद्धा बुद्धि-धृति-धारणा और अनुप्रेक्षा पूर्वक पाप व्यापारों से शरीर को पृथक् करता हूं।

बाद में 'अन्नत्थ' कहकर एक "नवकार" का काउस्सग्ग करे। काउस्सग्ग पारकर "नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व साधुभ्य" कहकर एक स्तुति कहे।

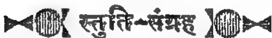
❁ स्तुति ❁

तीर्थङ्कर शङ्कर सुखसागर भगवान्,
हरिपूज्य जिनेश्वर त्रिभुवन पुण्य प्रधान।

सुव्रत योगीश्वर अमम गुणी अरिहंत,
प्रणमामि 'कवीन्द्र' सुवन्दित-पद जयवंत ॥



चैत्यवंदन से पहले प्रार्थना रूप बोलने योग्य



। १ ।

ज्ञाता समस्त-सुवस्तु के भव-
सिन्धु—तट झट पा गये,
अविरोध पूर्वापर वचन-
वादक विमल-जीवन भये।
जो साधुवन्द्य अशेष-दोष-
विमुक्त गुण-निधि धन्य हैं,
वन्दू सदा उनको, भले वे-
वीर हरि या अन्य हैं।

श्लोक

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि शोषणाय ॥
त्वं नाथ ! दु खिजनवत्सल ! हे शरण्य-
कारूण्य पुण्य वसते ! वशिनां वरेण्य !।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय
दुःखाङ्कुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि ॥

। दुहा ।

शस्त्र नहीं मायानहीं, नारी भी नहीं साथ।
वीतराग जिन नाथ को, याते जोड़ू हाथ ॥१॥
जिन प्रतिमा जिन सारखी, आगम वचन प्रमाण।
पूजू प्रणमू प्रेम से, पाउ कोटि कल्याण ॥२॥

प्रभु-दर्शन सुख सम्पदा, प्रभु दर्शन नवनिद्ध ।
प्रभु दर्शन थी पामिये, सकल पदारथ सिद्ध ॥३॥
सुखसागर भगवान् जय, जयहरि पूज्य जिनेश ।
जय कवीन्द्र वर वन्द्य तू, जय दशसे महेश ॥४॥

(१)

ॐ कार बिन्दु सयुक्त, नित्य ध्यायन्ति योगिन ।
कामद मोक्षद चैव, ॐ काराय नमो नमः ॥ १ ॥

(२)

दर्शन देवदेवस्य, दर्शन पाप—नाशन ।
दर्शन स्वर्गसोपान, दर्शन मोक्ष—साधन ॥ २

(३)

सरस शांत सुधारस सागर, शुचितरं गुणरत्नमहाकर ।
भविक पकज बोध दिवाकर, प्रतिदिन प्रणमामि जिनेश्वर ।३

(४)

महोदयमयं, कैवल्य—चिद्दृग्मय ।

रूपातीतमय स्वरूपरमण, स्वाभाविद्ध-श्रीमयद् ॥
ज्ञानोद्योतमय कृपारसमय, स्याद्वादविद्यालय ।
श्रीसिद्धाचल-तीर्थराज मनिशं, वन्देहमादीश्वरम् ॥

(५)

नेत्रानन्दकरी भवोदधितरी, श्रेयस्तरोर्मंजरी ।
श्रीमद् धर्म-महानरेन्द्र-नगरी, व्यापल्लतानूमरी ॥
हर्षोत्कर्षशुभ—प्रभावलहरी, रागद्विषांजित्वरी ।
मूर्तिं श्रीजिनपुंगवस्य भवतु श्रेयस्करी देहिनाम् ॥

(६)

अर्हन्तो भगवत इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिता-
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्याउपाध्यायका ॥
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका ।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

(७)

श्री जगनायक, तु धणी महा मोटा महाराज ।
मोटे पुन्ये पामीयो, तम दरसन में आज ॥

(८)

आज मनोरथ सब फले, प्रगटे पुण्य कलोल ।
पाप करम दूरे टल्या, नाठा दु ख ददोल ॥

(९)

प्रभु दरसन सुखसम्पदा, प्रभु दरसन नवनिद्धि ।
प्रभु दरसनथी पामीए, सकल पदारथ सिद्धि ॥

(१०)

भावे जिनवर पूजिये, भावे दीजे दान ।
भावे भावना भावीए, भावे केवल ज्ञान ॥

(११)

जिवड़ा ! जिनवर पूजीए, पूजा नां फल होय ।
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय ॥

(१२)

जगमें तीरथ दोय बड़ा, शत्रुंजय गिरनार ।
गढ़ ऋषभ समोसर्या, एक गढ़ नेमकुमार ॥

(१३)

फूला केरा बाग में, बैठा श्री जिनराज ।
जिम तारामां चन्द्रमा, तिम सोहे महाराज ॥

(१४)

वाडी चम्पो मोगरो, सोवन कुलियाँ ।
पाम जिनेश्वर पूजिये, पाँचों अंगुलियाँ ॥

(१५)

प्रभु नाम की औषधी, खरे मनसे खाय ।
रोग शोक व्यापे नहीं, महादोष मिट जाय ॥

(१६)

प्रभुका नाम अमोल है, या वणमें नहिं मोल ।
नफा भडूर टोटा नहीं, प्रभु मुख से बोल ॥

(१७)

आमा म्हाली वीजली, पाणी म्हालो
राजुल म्हाला नेमजी, अपणो [illegible] ॥

(१८)

अरिहंत सिद्ध आचारज भला, उपाध्याय महाराज।
साधु सेवो भावसे, पाँचु ही मंगलिक काज ॥

(१)

॥ श्री आदीश्वर चैत्यवंदन ॥

जय जय नाभिनरिंद नंद, सिद्धाचल मंडन ।
जय जय प्रथम जिणंद चंद, भवदुःख विहंडण ॥
जय जय साधुसुरिंद वृंद-वंदिय परमेश्वर ।
जय जय जगदानंद कंद, श्री ऋषभजिनेश्वर ॥
अमृत सम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ।
तुझ पद पंकज प्रीतिधर, निशदिन नमत कल्याण ॥

(२)

॥ श्रीऋषभ जिन चैत्यवन्दन ॥

सुवर्ण वर्ण गजराज गामिन । प्रलम्ब-बाहु, सुविशा
लोचनम् ॥ नरामरेन्द्रैः स्तुतपाद पङ्कज । नमामि भक्त्
ऋषभ जिनोत्तमम् ॥ १ ॥

(३)

॥ श्री शांति जिन–चैत्यवन्दन ॥

सोलम जिनवर शान्तिनाथ, सबो सिर नामी।
कंचन वरण शरीर कांति अतिशय अभिरामी ॥१॥
अचिरा अगज विश्व सेन नरपति कुलचन्द।
मृग लंछन धर पद कमल, सुर सुर नर वृन्द ॥२॥
जगमां अमृत जेहवी ए आस अढारस अथ।
एक मने आराधतां लहिये कोटि कल्याण ॥३॥

(४)

॥ श्री नेमिजिन–चैत्यवन्दन ॥

प्रह समे प्रणमो नेमिनाथ, त्रिभुवन सुखकार।
जादव कुल अवतंस हम, त्रिभुवन सुखकार ॥१॥
समुद्र विजय शिवादेवी जात, वर गुण गण भंडार।
सुंदर श्याम शरीर ज्योति, झगे मनोहार।
गढ गिरनार जिण ध्यान, अमर पद वसिराम।
तास क्षमा कल्याण मुनि आशीष करे प्रणाम

(५)

॥ श्री नेमिजिन–चैत्यवन्दन ॥

तोड़ी अड भव प्रीतडी, छोड़ी राजुल नार ।
पशुओं की रक्षाकरी, धन धन नेमि कुमार ॥१॥
देव दयालु दीपता, ब्रह्मचारी अरिहंत ।
शंख सुलछन, श्याम तन, जयतु नेमि जयवंत ॥२॥
सुखसागर भगवान हरि पूज्य परम गुण धाम ।
गढ गिरनारे शिव गया, निश दिन करूँ प्रणाम ॥३॥

(६)

॥ स्तंभन पार्श्वनाथ–चैत्यवदन ॥

सेढी तट मेरूधाम, थमणपुर ठाम ।
सम सिरि पास साम, राजे अभिराम ॥१॥
विबुधेसर सिरि अभयदेव, सठवियाणदिय ।
शुद्ध जल सिंचिय नीलवरण, फण पल्लव मंडीय ॥२॥
कुसुमावलीण, शिवफल दायक जाण ।
भवियण–पणु, पावउ पद

(७)

॥ श्री गोडी पार्श्व–चैत्यवन्दन ॥

पुरिसा-दाणीय पासनाह, नमिये मनरंग ।
नील वरण अश्वसेननंद, निर्मल निस्संग ॥१॥
कामित पूरण कल्प शाखी, वामा सुत सार ।
श्री गोडिपुर साम नाम, जपिये निरधार ॥२॥
त्रिभुवन पति त्रेवीसमो ए, अमृतमय असयाण ।
ध्यान धरता एहनो, प्रगटे प . कल्याण ॥३॥

(८)

॥ श्री पार्श्वजिन–चैत्यवन्दन ॥

ॐ अर्हं ज्योतिमयी, पुरुषादानी देव ! ।
परम प्रभावी पार्श्वजिन ! चाहू तुम पद सेव ॥१॥
चिन्तामणि चिन्तामणि मंत्र मनोहर नाम ।
चिन्ता चूरण कर करो, मुझ मन चिंतित काम ॥२॥
धरण इन्द्र पद्मावती सेवित पारस नाथ ! ।
नित कवीन्द्र कीर्तित करो, मोहनाथ ! सनाथ ॥३॥

(९)

॥ श्री महावीर–चैत्यवन्दन ॥

यदु जगदाधार सार, शिवसपति कारण ।
जन्म जरा मरणादिरुप, भव ताप निवारण ॥१॥
श्री सिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनु जात ।
सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥२॥
अमृत रूपे राजतो ए, चोवीसमो जिनराय ।
क्षमा प्रमुख कल्याण गुण, आपोकरी सुपसाय ॥३॥

(१०)

॥ श्री महावीर जिन–चैत्यवन्दन ॥

सिद्धारथ सुत सिंह सम, कर्मकरी कर नाश ।
सिद्धारथ प्रकटा दिया, शासन सुखद प्रकाश ॥१॥
दुखमा भी सुखमा हुआ, पचम आरा आज ।
दर्शन पाये आपके, जय २ गरीब निवाज ॥२॥
मोक्ष धाम पावापुरी, स्पर्शन, दर्शन योग ।
पाकर अब "हरि" पूज्य हो, पाउगा शिव भोग ॥३॥

(११)

॥ श्री सिद्धगिरि–चैत्यवन्दन ॥

जय २ नाभि–नरिंद–नंद, सिद्धाचल मंडण ।
जय २ प्रथम जिणंद चंद, भव दु:ख विहंडण ॥१॥
जय २ साधु सुरींद विंद, वंदिय परमेसर ।
जय २ जगदानंद–कंद, श्री ऋषभ जिनेसर ॥२॥
अमृत सम जिन धर्मनोए, दायक जगमें जाण ।
तुझ पद पङ्कज प्रीतधर, निशदिन नमत कल्याण ॥३॥

(१२)

॥ श्री सम्मेत शिखर–चैत्यवन्दन ॥

तारक तीर्थ शिरोमणि–जय जय गिरि सम्मेत ।
दर्शन वन्दन स्पर्शना शिवरमणी संकेत ॥१॥
अजितादिक जिनवर यहां, सिद्ध हुए हैं बीश ।
कर्मवर्गणा दलिक सब, ध्यान घटी में पीस ॥२॥
पार्श्वनाथ के नाम से, त्रिभुवन में प्रख्यात ।
तीर्थेश्वर "हरि" पूज्यपद, प्रणमूं नित

(१३)

॥ पर्यूषण पर्व–चैत्यवन्दन ॥

पर्व पजूषण कालमें, वन्दू श्री जिनराज।
धन्य घड़ी दिन भाग धन पाया अविचलराज ॥१॥
कलियुग सतयुग से बड़ो, मानु मैं सुखकार।
घन भेटे जिनराज को, वांछित फल दातार ॥२॥
सुखसागर भगवान जिन, त्रिकरण शुद्धि विधान।
सुरगण नायक "हरि" नमें, नमू नित्य बहुमान ॥३॥

(१४)

॥ श्री नवपद्–चैत्यवन्द्न ॥

जय २ श्री अरिहंत जय–सर्व सिद्ध भगवान।
जय सूरीश्वर जय सदा पाठक ज्ञान निदान ॥१॥
जय साधु समतामयी परमेष्ठी ये पांच।
चिन्तामणि इनसे अवर नक्की नकली काच ॥२॥
सम्यग् दर्शन–ज्ञानवर चरण तपस्या चार।
दिव्य परम गुणसे "हरि" पूज्य बनें नर नार ॥३॥





॥ प्रभु प्रार्थना ॥

(तर्ज—तेरा कौन है तेरा कौन है हां मेरा कौन है)

प्रभु भक्ति में मन जोड़ जोड़ जोड़ जिया जोड़रे ।
जिया जोड़रे जिया जोड़रे हारे जिया जोड़रे ॥ टेर ॥

दूर नहीं भव सिंधु किनारा, प्रभु भक्ति हो जीवन नारा।
दुनिया से नाता तोड़ तोड़ तोड़ जिया जोड़रे ॥ प्रभु० १॥

सबसे ऊंचा प्रभु का पद है, अन्तर घट में प्रभु की हद है।
पाने को अब उसे दौड़ दौड़ दौड़ जिया जोड़रे ॥ प्रभु० २ ॥

'जिनहरि'पूज्यप्रभु सुखसागर अपना जीवन कुसुम चढ़ाकर।
सेव सदा कर होड़ होड़ होड़ जिया जोड़रे ॥ प्रभु० ३ ॥

॥ प्रभु प्रार्थना ॥

(तर्ज—मत कर तू अभिमान)

आजा तू भगवान चाहूं दरशन दान ॥ टेर ॥
पापी धर्मी तेरे मत में, एक रूप होत सगत में।
ज्योति रूप महान। आजा तू भगवान ॥१॥
पापी हूं परवा मत करना, करुणा निधि करुणा तुम करना।
पावन गुण परधान। आजा तू भगवान ॥२॥
जिन हरि पूज्य पधारो स्वामी, मन मंदिर की मेटो खामी।
धरूं सदा मैं ध्यान। आजा तू भगवान ॥३॥

॥ प्रभु की पहिचान ॥

(तर्ज—थांरा सागारे देवरिया राम रसिया)

प्रभु की पावन यह पहिचान प्रभु की पावन यह पहिचान।
तीन लोक के शिखर विराजे जगनायक जगमान ॥टेर॥
जनमते नहीं जो मरते, केवल ज्ञान निधान।

करता हरता नहीं जो परके, निज पद पुण्य प्रधान ।।प्र० १।।
जो ज्योतिर्मय सिद्ध सरूपी, भविजन सिद्धि निदान ।
कर्म कलंक रहित अभिरामी, त्रिभुवन तिलक समान । प्र० १।
प्रभु मंदिर में प्रभु की प्रतिमा, आलंबन गुण खाण ।
'जिनहरि' पूज्य प्रभु दर्शन से प्रकटे परम कल्याण । प्र० ३।

॥ प्रभु–प्रार्थना ॥

मैं आया तेरे द्वार पर कुछ लेकर जाऊँगा ।
अपने सुख दुःख की सारी बातें नाथ सुनाऊंगा ।।टेर।।

जबकि तेरा कहलाता हूँ मैं, सेवक दुनियां में ।
तब क्योंकर अपना जीवन, दुखमय नाथ बिताउंगा । मैं० १।
तू वीतराग रहता है इससे, यह दुःख पाना है ।
पर तुझको तज मैं औरों का, नहीं दास कहाउंगा । मैं० २।
अपने अनन्त सुख में से मुझको, तू कुछ दे देगा ।
तो 'हरि-कवीन्द्र' होकर मैं तुझसे नित गुण गाउंगा । मैं० ३।

॥ प्रभु–प्रार्थना ॥

(तर्ज—मेरी लाजका तुम अमर रख लेना)

तुम्हें नाथ नैया तिरानी पड़ेगी ।
तिरानी पड़ेगी तिरानी पड़ेगी ॥ तुम्हें० टेर ॥

तारन तरन है विरद तुम्हारो प्रभु ! ।
डूबत नैया तिरानी पड़ेगी ॥ तुम्हें० ॥ १ ॥

भव-सागर में डूबी जो नैया मेरी ।
वो तेरे विरद म स्वामी पड़ेगी ॥ तुम्हें० ॥२॥

"हरि कवीन्द्र" की यही विनती है ।
मुक्ति-नगरिया दिखानी पड़ेगी ॥ तुम्हें० ॥३॥

॥ प्रभु–प्रार्थना ॥

(तर्ज—यमुनाजी में खेले हरि राम सखा)

कहो कैसे सुनाउ प्रभु बीती बतियाँ ।
बीती बतियाँ मेरी बीती बतियाँ ॥ कहो०टेर ॥

जिमि जिमि याद मोहे आवत है तिमि तिमि ।
फटत जात है मोरी छतियाँ ॥ कहो० ॥१॥
जानत है तुही प्रभु बिन कहे बिन सुने ।
दुःखमय मेरी अन्तर गतियाँ ॥ कहो० ॥२॥
सब दुःख दूर कर अब प्रभु मेरे तुही ।
"हरि-कवीन्द्र" करे कीरतियाँ ॥ कहो० ॥३॥

॥ प्रभु–प्रार्थना ॥

(तर्ज—मेरी आहका तुम असर देख लेना)

तुंही तुही मेरा तूही तूही मेरा ।
तुही प्रभु प्राण आधार है मेरा ॥ टेर ॥
जीवन साथी हे नाथ बनादो ।
पड़ा हूँ शरन बनी चरनन चेरा ॥ तूही० ॥१॥
और प्रपंची अनेक मिले पर ।
कुछ भी किसी ने न दिल को है घेरा ॥ तूही० ॥२॥
नूरे नूरानी मोहनी मूरत ।
तू हुआ है निवेरा ॥

आती मही नहीं अबतो जुदाई।
तेरी हजूर में ही रहे मेरा डेरा ॥ तूही० ॥४॥
खिदमत के काबिल हे नाथ बनादो।
'हरि-कवीन्द्र' मिटा दो बखेरा ॥ तूही० ॥५॥

॥ मन -प्रबोध ॥

(तर्ज—रसिया की)

जिनवर दरिसण पाय मनवा! तू क्यों थिर नहीं थाय।टेर।
जिनवर दरिसण दुरलभ जाणो।
बार बार मिलणो नहीं टाणो।
हार थारो आयुष एले जाय। मनवा तू क्यों थिर० ॥१॥
भोग रोग से भरे पड़े हैं।
मारग दुश्मन घने अड़े हैं।
हारे थारी चपलता नवि जाय। मनवा तू क्यों थिर० ॥२॥
भज थिर हो हरिपूज्य प्रभुको।
ज्ञान ज्योति से व्यास विभुको।
हार थारी कीर्ति कवीन्द्र जु गाय। मनवा तू क्यों थिर०।३।

॥ प्रभु–प्रार्थना ॥

(तर्ज –हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिये)

दीन बन्धो ! हे दयासिन्धो ! अरज सुन लीजिये ।
दूर कर अज्ञान सब शुभ ज्ञान हमको दीजिये ॥टेर॥
बालक सभी हम हैं तुम्हारे प्रेम को बस चाहते ।
हे पिता परमातमा बस प्रेम बरषा दीजिये ॥ दीन० ॥१॥
माँ बापका ही बालकों को सर्वथा आधार है ।
आप हैं माँ बाप तो रक्षा हमारी कीजिये ॥ दीन० ॥२॥
निर्बल सभी [illegible] क्यों रहें जबकि पिता बलवान हो ।
शक्ति देकर दूर निर्बलता हमारी कीजिये ॥ दीन० ॥३॥
देश–जाती–धर्म का उद्धार ज्यों होने लगे ।
मार्ग वह हमको प्रभो बस आप दिखला दीजिये । दीन०॥४॥
तुम रिझाने को न हममें है कवीन्द्रों की कला
भेंट है यह कल्पना स्वीकृत विभो कर लीजिये ॥ दीन

॥ प्रभु–प्रार्थना ॥

(तर्ज—गुलशन में खिलेंगे दोनों जने)

प्रभु आओ मिलें हम दोनों जने ।
दोनों जने हाँ दोनों जने प्रभु आओ ॥टेर॥
प्रभु तू है बादल मैं हूँ बिजली ।
पानी होकर बहें हम दोनों जने ॥प्रभु०१॥
प्रभु तू है चन्दा मैं हूँ तारा ।
हिल मिल के खिलें हम दोनों जने ॥प्रभु०२॥
प्रभु तू है सूरज मैं अनु किरण ।
परकाश करें हम दोनों जने ॥प्रभु० ३॥
प्रभु तुम हो धागा फूल बनूँ मैं ।
फिर माला बनें हम दोनों जने ॥प्रभु० ४॥
प्रभु तू सुख—सिन्धु मैं हूँ नदियाँ ।
एक रस बनें हम दोनों जने ॥प्रभु० ५॥
प्रभु तू है भौंरा मैं लट छोटी ।
एक रूप बनें हम दोनों जने ॥प्रभु० ६॥

प्रभु तू है काव्य में हूं कवीन्द्र ।
दिव्य रसको बहावें दोनों बने ॥प्रभु० ७॥

॥ सिद्धाचल-स्तवन ॥

तर्ज—चाहे तारो या न तारो-(कव्वाली)]

बना रहूं मैं, तीर्थेश के शरण में ।
स भी जो हो तो, तीर्थेश के शरण में ॥टेर॥
दी विमल जल—धारा समान धारा ।
बहा करू मैं, तीर्थेश के शरणमें ॥ चाहू० १ ॥
के रूख जैसे, श्रम भार नम्र होकर ।
सफल बनाऊ, तीर्थेश के शरणमें ॥ चाहू० २ ॥
सूयकुण्ड जैसे, गम्भीर तापहारी ।
र्ण हो रहूं मैं, तीर्थेश के शरणमें ॥ चाहू० ३ ॥
टूक के शिखर सम, हो निष्प्रकम्प योगी ।
स्वसाध्यको मैं तीर्थेश के शरण में ॥
"हरि कवीन्द्रों के भी अगम्य
तीर्थेश के शरणमें

॥ श्री ऋषभजिन स्तवन ॥

(राग—मीम पलास)

धन्य हो ऋषभदेव भगवान्, युगला धर्म निवारण वाले ।टेर।
प्रथम तुम दिया जगतको ज्ञान, बताया खान पान अनुमान
किया जगमें नाम महान्, उत्तम नीति दिखाने वाले । ध० १।
प्रथम तुम दीक्षा व्रत लिया धार, जाना सब संसार असार।
तबसे हुवा शांति प्रचार, जीवों की रक्षा करने वाले । ध० २।
प्रथम तुम दिया धर्म उपदेश, तोड्यो मिथ्यामति को लेश।
हार्यो मोह महत नरेश, सत्य की राह दिखाने वाले । ध० ३।
प्रथम तुम भेजी मोक्ष मझार, माता मरुदेवी दिलधार
तैसे "हरि" को भी दो तार, मुक्तिक पदके देने वाले । ध० ४।

॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तवन ॥

(राग—रसी-मारवाडी जिला की)

चन्द्र प्रभुजिन चन्द्र नमो सुरा कन्दार, सब फंद विसार
अमन्द हरे दुख द्वदारे सुजाण ॥ चन्द्र० १

चन्द्र सुलांछन श्वेत सुवर्ण विराजे रे, जिनराज अपार ।
दर्शनगुण दर्शन निर्मल आनदारे, सुजाण ॥ चन्द्र० २॥
कारण जोगे कारज सिद्धि पावेरे, स्व स्वभावे निरधार ।
तन्मय अशठ सरल थिर सेवक बटारे सुजाण । चन्द्र० ३ ।
प्रभुमुख शारद चन्द्र सुधा बरसावेरे, हरसावे नरनार ।
नयन कटोरे भर पीवत निर्द्वन्दा रे सुजाण ॥ चन्द्र० ४ ॥
'हरि कवीन्द्र' प्रभु चरण शरण मैं पायारे, तज माया चार ।
पाछू नहीं अब नर सुरपद धरणीन्दा रे सुजाण । चन्द्र० ५ ।

॥ श्री शान्ति–जिन स्तवन ॥

(तज—थवार मेरे प्यारे पारस प्रभु है आधार)

दर्शन की क्या है बहार ?
बहार मेरे प्यारे ! दर्शन की क्या है बहार ? । टेर ।
श्री हयणापुर तीरथ स्वामी, शांति प्रभु सुखकार ।
कार मेरे प्यारे ॥ दर्श० १ ॥
विश्वसेन अचिरा सुत वन्दो, भदन से होंगे भव पार—
पार मेरे प्यारे ॥ दर्श० २ ॥

चक्री तीर्थंकर पदवी के धारी, प्रभु हैं करुणा भंडार—
भंडार मेरे प्यारे ॥ दर्श० ३ ॥
मृग लाछन प्रभु कांचन काया, पायाका है न विकार—
विकार मेरे प्यारे ॥ दर्श० ४ ॥
'जिनहरि' पूज्य प्रभु दर्शनकी महिमा आतम दर्शन का—
का' मेरे प्यारे ॥ दर्श० ५ ॥

॥ श्री नेमि प्रभु—प्रार्थना ॥

(तर्ज—छोटे से बलमा मोरे आंगने में गुल्ली खेलें)

भूलो मत बलमा नेमि स्याम थे पूरव भव प्रीति ।
स्याहन आय गये लोट यह कैसी है रीति ॥ टेर
पशुओं की सुनके पुकार बलमा करुणा लाई ।
मुझको बिसराई गये स्याम सोचो क्या है नीति ॥ भू० १
दर्शन कर पाई नहीं नाथ बस इतना सुन पाई ।
स्याम गये गिरनार मैं तो रह गई रीती ॥ भू० २
विरहा की दिल मेरे आग बलमा खूब लगाई ।
कैसे बुझाई कहो आय मुझको बलमा बीती ॥ भू० ३

अब ना रही कोई आश मेरी आप सहाई।
आई मैं सलमा तोरे पास दरशन अमृत पीती ॥ मृ० ४ ॥
धन राजुल अवतार प्रभु से प्रीति समाई।
माया छिटकाई सुकवीन्द्र गावें गुणमय गीती ॥ मृ० ५ ॥

॥ श्री नेमिजिन-प्रार्थना ॥
(तर्ज—छोटी मोटी सुइयां रे)

कैसा तुम्हारा है प्रेम कहोजी ? नेमि नाथजी !
तुम हम दोनों पूर्व भवों के हो पूर्वभवों के,
प्रेमी हैं भगवान् ! जाते हो कहां नाथजी ॥ कै० १ ॥
समुद्र विजय शिवादेवी के नन्दन देवी के नन्दन,
जीवन कर सुनसान। जाते हो कहां नाथजी। । कै० २ ॥
तुमने दया है की पशुओं पे, की पशुओं पे,
सुनिये दयानिधान। जाते हो कहां नाथजी ! ॥ कै० ३ ॥
जीवन धन ! तुम मानो न मानो, हां मानो न मानो,
मैं चलूं सग सुजान, जाते हो कहां नाथजी। ॥ कै०

'जिनहरि' पूज्य प्रभु परमेश्वर, प्रभु परमेश्वर,
दे दो पहले ध्यान, जाते [redacted] महां नाथजी ॥ हे० ५ ॥

॥ श्री पार्श्व जिन स्तवन ॥

(तर्ज—मेरे आका मदीने बुलालो मुझे)

चिन्ता चूर चिंतामणि पार्श्व प्रभो ! ।
मेरे चिंतित अर्थ को पूर प्रभो ! ॥ टेर ॥

चिंतामणि तू नाथ मेरा, विश्व में विख्यात है ।
चिंता हरण है बिरुद तेरा, तू जगत का तात है ॥
अपने दासकी आश को पूर प्रभो ! ॥ चिंता० १ ॥

जब कि तू चिंतामणि है मम हृदय मझार में ।
दारिद्र्य दुश्मन क्यों सतावे फिर मुझे संसार में ॥
करो दारिद्र्य मेरा दूर प्रभो ! ॥ चिंता० २ ॥

भगवान श्री हरि पूज्य तू मेरा परम आधार है ।
तेरे चरण के शरण में जोड़े हृदय के तार हैं ।
पूरो दिव्य 'कवीन्द्र' में नूर प्रभो ! ॥ चिंता० ३ ॥

॥ श्री पार्श्वजिन स्तवन ॥

(तर्ज–जिनासर स्वामि अंतरजामी तारो पारस नाथ–[राग –मांढ])

पूजू पारस स्वामी शिव सुखधामी विघ्न विदारन हार ।टेर।
तीरथ काशी बनारसी सुन्दर, मंदिर देव विमान ।
गंगा रंग तरंग विभूषित, दर्शन पुन्य प्रधानरे ॥ पू० १ ॥
नील वरण नव हाथ की काया, अहि लछन अभिराम।
अश्वसेन नृप वामा राणी, सुत शुभ गुण उद्दामरे ॥ पू० २ ॥
कमठ महा शठ बाल तपस्वी, धूणी जलता नाग ।
ज्ञानी प्रभु नवकार सुना, धरणी द्र किया महा भागरे।पू० ३।
जल उपसर्ग सहें सुखसागर, श्री भगवान अद्वेष ।
पद्मावती धरणीन्द्र सुसेवित, सम परिणामी विशेषरे।पू०४।
'जिनहरि' पूज्य प्रभु परमेश्वर, पारस मंत्र प्रभाव ।
दर्शन वदन पूजन प्रभुको, निज प्रभुता गुणदावरे।पू०५।

॥ श्री वीर प्रभु प्रार्थना ॥

(तर्ज—आओ आओ हे मेरे साधु रहो गुरु सग)

आओ आओ हे वीर प्रभुजी हमें बना दो वीर ॥ टेर ॥

पावन शासन हमने पाया आज आपका वीर ।
आराधन कर उसको मानें धन अपना तक़दीर ॥ आ० १ ॥
दूर हटावें हम निर्बलता होवें हम बलवीर ।
घबरावें ना दुखमें ऐसी दिखलादो तदबीर ॥ आ० २ ॥
गुरुजन विनय कर हम बनकर ज्ञान गुणी गम्भीर ।
धीर वीर हो निज जीवन से हर पराई पीर ॥ आ० ३ ॥
सुखसागर भगवान महोदय प्रेम सुपावन नीर ।
वर्षा दो जीवन उपवन में फैले सुरभि समीर ॥ आ० ४ ॥
हम मिल गावें सविनय जय जय जिनहरि पूजित वीर ।
प्रभु चरणों में शरणागत हो पावें भवजल तीर ॥ आ० ५ ॥

॥ महावीर जिन स्तवन ॥

(तर्ज—अब तेरे बिना कौन मेरा कृष्ण कन्हैया)

वन्दूँ मैं महावीर मेरे पीरहरैया, आधार एक विश्व के उद्धार करैया॥टे

शक्ति नहीं है पास में छाई हैं बुज़दिली ।
इससे ही मेरी आतमा रहती है अधखिली ॥
फि दो मुझे नाथ महाशक्ति धरैया ॥ व दू० १ ॥

माया महा अन्धेर की छाया है छारही।
खाता हूँ ठोकरें न मुझे राह मिल रही ॥
पथ आओ दिखाओ ए मेरे ज्योति जगैया। वन्दू० २।
सुखसिन्धु है भगवान तुही मेरा सहारा।
'हरिपूज्य' दिखादो मुझे भव सिंघ किनारा ॥
मेटो अनादि कालका यह भुल भुलैया। वन्दू० ३।

॥ श्री पार्श्व जिन स्तवन ॥

(राग—मारग होला)

जय बोलोरे पास जिनेश्वर की जय बोलो०॥ टेर ॥
मस्तक मुकुट सोहे मन मोहन, अंगियाँ मोहे केसरकी। ज० १।
त्रिभुवन ज्योति अखंडित तनकी, स्याम घटा
जैसे जलधर की ॥ जय० २॥
बाल पणे में अद्भुत ज्ञानी, करुणा कीनी विषधरकी। ज० ३।
कमठ उड़ाय वाय ज्यूं बादल, जीत करी अपने घरकी। ज० ४।
मात वामाउयरे जिन जायो, राणी अश्वसेन नरेश्वरकी। ज०।

अष्ट करम दल सबल खपाये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी। ज०
कहे 'जिनचंद' मेरे प्रभु पारस, जैसी छाया सुरतरुकी। ज०

॥ श्री मधुवन–शिखरजी स्तवन ॥

मधुवन में आय मची होरी, मधुवन में ॥ टेर ॥
ज्ञान गुलाल अबीर उडावो समता केसर रंग घोरी। मधु० १
अमृतरूप धरम जिनवरको शुद्ध 'क्षमा' कहे करजोरी। मधु० २

॥ श्री पार्श्व जिन स्तवन ॥

(राग—बसन्त)

सांवरो सुखदाई जाकी छवि बरणी न जाई। सांवरो० । टेर
श्री अश्वसेन वामाजी को नंदन, कीरती त्रिभुवन छाई
समेत शिखर गिरि मंडन प्रभु को, देख दरश हरखाई
हृदय मेरो अति हुलसाई ॥ सांवरो० १
आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो आज आनंद बधाई
तीन भुवन को मैं नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई
सफल मेरो जन्म कहाई ॥ सांवरो० ।

प्रभु के सरस दरस बिनपाये, भव भव भटक्यो मैं भाई।
अब तेरो चरण शरण चितचाहत, 'बाल' कहे गुण गाई॥
प्रभुजी से लगन लगाई॥ मावरो० ३॥

॥ श्री सम्मेत शिखर तीर्थ स्तवन ॥

(राग—गजल)

शिखर सम्मेत तीरथ में, अजब आनन्द आता है।
विनय से वन्दना करते, भविक मन मोद पाता है॥टेर॥

यहां पर बीस कल्याणक, हुए हैं बीस जिनवर के।
फरसते बीस टूकों को, अजब आनन्द आता है॥ शि० १॥

यहां पर पाम जिनवर की, मनोहर सांवरी सूरत।
प्रभावक दिव्य दर्शन से, अजब आनन्द आता है॥ शि० २॥

यहां पर भोमिया राजा, विराजें जागती ज्योति।
उन्हीं की छत्र छाया में, अजब आनद आता है॥ शि० ३॥

विकट गिरिराज पर चढ़ते, निरखते मोहिनी लीला।
विशदवर शांत जीवनमें, अजब आनद आता है॥ शि० ४॥

परम "हरि" पूज्य तीरथ में, निजातम भाव शुद्धि से।
रमण करते हुए निशदिन, अजब आनन्द आना है॥ शि०७॥

॥ श्री पर्यूषण स्तवन ॥

(तर्ज—गोपीचन्द लड़का बादल बरें र)

पर्यूषण म में वीतराग, भजूं भाव से ॥ टेर ॥
श्री जिनराज जगत गुरु स्वामी, आतमरामी नामी।
अन्तरजामी बहुगुण धामी, आरामी अभिरामीर। पर्यू०१।
श्री जिन आतम अरु निज आतम, रूप अनूप विचारे।
जिन दर्शन निज दर्शन करके, भेदखेद सब टारे र। पर्यू०२।
पर्यूषणमें समकित मिथ्या, मिश्र मोहनी टारी।
प्रथम अनन्तानुबन्धी की, चौकड़ी दूर निवारी र। पर्यू०३।
काल अनादि पुद्गल सगी, बहिरातम बेढगी।
अतर गुणचगी हो करके, हुआ परमपद रगीरे। पर्यू०४।
पर्यूषण मे सुर "गणनायक–हरि" नन्दीश्वर जावे।
ही जिन मदिर में जिन वन्दू मैं बहु भावेरे। पर्यू०५।

॥ दीपावली—स्तवन ॥

[तर्ज—मैं बन की चिड़िया०]

हे वीर ! विरह दुख महा न मुझ से जाई रे,
था स्नेह आपका मुझ पर अति सुखदाई रे ॥ टेर ॥
मैं इन्द्र जाल मानाथा, लड़ना प्रभुसे ठाना था,
स्वामी प्रभाव पर वेही भाव, मेरे समस्त मिट जाइ रे ॥१॥
मैं आप रुप भूलाथा, मिथ्यात्व झूले झूला था,
प्रभु आप दर्श होते प्रकर्ष, समकित ज्योति प्रकटाईरे ॥२॥
प्रभु सेवाथी सुखकारी, प्रभु दर्शन भव भय हारी।
आनद कद सब दु ख दद, आमूल चूल विघटाईर ॥ हे ३॥
मेरे प्रभु केवल ज्ञानी, तीर्थंकर सब गुण खानी।
अमृत समान वाणी प्रमाण, भवि प्राणी सुन शिव जाईर।हे४।
जब २ शंका होती थी, प्रभु कृपा तभी होती थी,
सविवेक एक उत्तर अनेक, भ्रम सुनते सबमिट जाईरे ॥हे५॥
प्रभु वीतराग बड भागी, मैं तो हू पूरा रागी,
तज राग भाव, रमते स्वभाव गौतम शिव पदवी पाईर

प्रभु सुखसागर भगवाना, श्री जिनहरि पूज्य प्रधाना,
गौतम गणेश समरो विशेष,सेवा कवीन्द्र मन भाईरे ।।है७।।

॥ पौष दशमी स्तवन ॥

नित नमु पारस प्रभु जिनराज जिनकी महिमा अनुपम आज ।टेर
पौष वदी दशमी दिन धन धन,जगमें जनमें जिन जगतात ।१।
जनम कल्याणक परमपुनीता,काशी नगरी धन धन धाम ।२।
अश्वसेन नृप वामाराणी,धन जिन जनक जननी विख्यात ।३।
कुटिल कमठ मद हारक तारक, नाग नागनी के अभिराम ।४।
'हरि कवीन्द्र' सुकीर्तित मैंने, पायोधन जिन दर्शन सार ।५।

॥ अखातीज का स्तवन ॥

[तर्ज—अवधू सो जोगी गुरु मेरा—आसावरी]

बाबा ऋषभ जिनंद पधारें ।
कर्म कलंक निवारें रे ॥ बाबा० ॥टेर॥
राज तजा सुख साज तजा निज आतम के उपयोगी ।
धुर विचरे स्वामी,संयम सुखके भोगीरे ॥ बा०।१।

भिक्षा विधि नहीं लोक पिछाने, प्रभु कर्मोदय जानें ।
मौन सहित वर्षाधिक तपको, परम क्षमा मह ठानेरे ।बा०।२।
भक्ति सहित नरनारी प्रभु के अर्पण हित नित लावें ।
कन्या हयगय रथ रतनों को,नाथ नजर नहीं ठावेरे ।बा० ३।
श्री श्रेयांस कुँवर पुन्योदय जाती समरण भावे ।
जिन दर्शन भिक्षा विधि जाने इक्षुरस वहिरावेर ॥ बा०॥४॥
धन दाता धन पात्र प्रभुजी धन दिन तीज सुहावे ।
पचदिव्य प्रकट नित जय जय सुरगण पति हरि गावें ।बा०५।

॥ नवपद स्तवन ॥

[तर्ज—जिनमत का डंका आलम में]

नित नवपद गुण भडार नमू, सुपकारक परमाधार नमू ।टेर।
अर्हंपद आंतमरूप नमू, प्रभु सिद्ध महागुण भूप नमू ।
सूरीश्वर-शासन थम्भ नमू, पाठक पद पाठारम्भ नमू ॥
॥ नित नवपद

साधु निज साधन हेतु नमूं, दर्शन पद सब गुण केतु नमूं।
वर ज्ञान चरण तप योग नमूं, ये नवपद निजपद भोग नमूं।
नित नवपद० ॥ २ ॥

सुखसागर पद भगवान नमूं, सब मंत्र तंत्र परधान नमूं।
'हरि' पूज्य समीहितकार नमूं, परमोदय कारक सार नमूं॥
नित नवपद० ॥ ३ ॥

≪ स्तुति-संग्रह ≫

कल्याणक स्तुति

मैं क्या हूं ? आतम-द्रव्य महागुण-खाण,
फिर क्यों दुख भोगूं ? कर्म योग परमाण।
क्या कर्म हमारे हमको दें संताप ?
हां, जिन पद पूजो हो कल्याण अमाप॥१॥

श्री ऋषभजिन स्तुति

वृषलछन कचन काया अद्भुत रूप,
मरुदेवा नदन जगवदन जग भूप ।
नृप नाभि कुलाम्बर अंबरमणि अनुरूप,
नित भद्र भावे निज गुण दाव अनूप ॥१॥

श्री शांतिजिन स्तुति

श्री शांति जिनेश्वर परम शान्ति दातार,
यह जीव अनादि कारण पाकर चार ।
कर्मों के वश में रहे सदैव अशान्त,
शांति प्रभु सेवत होवे परम प्रशान्त ॥२॥

श्री पार्श्वजिन स्तुति

पाखण्ड मिटा दो होकर निर्भय वीर,
जहरीलों पर भी दया करो गुणधीर ।
अपने दुश्मन पर क्षमा करो आदर्श,
समझावें स्वामी पार्श्व नमूं बहु हर्ष

श्री वीरजिन स्तुति

सिद्धारथ नन्दन मात वत्र अवतस,
श्री त्रिशला माता कुक्षी–मानस हंस
जय वर्द्धमान जय महावीर भगवान,
जय शासन नायक मेरे जीवन प्रान ॥५॥

श्री नवपद स्तुति

नवपद निज पद में अवतारण कर आप,
ध्यावो मिट जावे पूरव कृत सब पाप।
नहीं होय कदापि रोग शोक सताप,
श्रीपाल तुवपणा मम सुख होय अमाप ॥६॥

श्री पर्यूषण स्तुति

जिन आज्ञा रागी बड़भागी भविलोक,
पर्यूषण चाहें सूरज को जिम कोक।
पर्वाधान में होवें उद्यमवन्त,
त्रिहू काले पूजे वीतराग अरिहंत ॥७॥

स्तुति

(उपजाति–छन्द)

दीव्यत्सुतीर्थेश्वर नाम कर्म—
प्रभावि–पुण्येन जिनेश्वराणाम् ।
कल्याण–कल्याणक पञ्चक यत्,
करोतु कल्याण मनन्तमिद्धम् ॥८॥

[श्री दादा गुरु स्तुति संग्रह]

(श्लोक)

दासानु दासा इव सर्व देवा, यदीय पादाब्ज तले लुठन्ति । मरुस्थली–कल्पतरु जीयाद् युग प्रधानो जिनदत्त सूरि । १ ।

चिन्तामणि कल्पतरुर्वराकौ, कुर्वन्ति भव्याः किमु काम गव्याः । प्रसीदत श्री जिनदत्त सूर सर्व पद पदे प्रविष्ट । २ ।

नो योगी न च योगिनी न च नराधीशश्च नो शाकिनी।
नो वेताल–पिशाच–राक्षस गणा नो रोग शोकौ भयम्।
नो मारी न च विग्रह प्रभृतयः प्रीत्या प्राणत्योचकैः।
यो नें श्री जिनदत्त सूरिगुरुवो। नामाक्षरध्यायति ॥३॥

(सवैया)

बावन वीर किये अपने वश, चौसठ योगिनी पाय लगाई।
डाइन माइन व्यन्तर खेचर भूत रु प्रेत पिशाच पुलाई॥
बीज तडक्क कडक्क भडक्क अटक्क रहे जु खटक्क न काई।
कह धर्मसिंह लघे गुण लीह दिये जिनदत्त की एक दुहाई॥

राजे शुभ ठौर ठौर एमो देव नहीं और,
दादो दादो नाम से जगत जश गायो है।
अपने ही भाव आय पूजे लक्ख लोक पाय,
ध्यामन को रनमाझ पानी आन पायो है॥
वाट घाट शत्रु दाट हाटपुर पाटन में,
देह गेह नेह से कुशल वरतायो है।

धर्मसींह ध्यान धरे सेवकों कुशल करे,
साचो श्रीजिन कुशलसूरि नाम यूं कहायो है॥

श्री दादा गुरु स्तोत्र

(लय—युग वर्षा संपद शिखरिणी वृत्त)

गुणी ज्ञानी दाता शिव सुख विधाता भुवन में,
नहीं है कोई भी गुरुवर तुही है बस तुही।
तुही माता तातानुपम गुण भ्राता हितु-सखा,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे। १।
तजे मैंने सारे कुपथ मतवाले कुगुरु जो,
महा मायावी हैं विषय रसरागी मलिन हैं।
मिला स्वामी तूही सुविहित-हितैषी यतिपते,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे। २।
तुही ज्ञाता त्राता जिनमत यशो विस्तृत विधि,
प्रभावी नेता है खरतरवराचार विदित।
महा पापी हूं मैं पतितपथगामी तदपि हे—
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे। ३।

सुनी ज्ञानी तेरी परम उपकारी सु महिमा,
पुरे ग्रामे देशे मम विनय भी एक सुन लो।
न होउ दुःखों से विचलित यही नाथ बल दो,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे। ४।

हटाये लोगों को व्यसन गणसे देव तुमने,
सुशिक्षा द स्वामी मिहिर मुझ पे भी अब करो।
समर्थों को जो भी विकट विधि हैं वे सहज हैं,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे। ५।

उपेक्षा जो मेरी कथमपि करोगे गुरुवर !,
सहारा कोई भी फिर न मुझको है जगत में।
सुनाता हूं बातें प्रभुवर सुनो कान धरके,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे। ६।

न है कोई ज्योति हृदय नम भेदी गुरु बिना,
न है कोई दानी परमपददायी गुरु बिना।
अपापी पापों को सुगुरु हरते हैं, इस लिये,
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे। ७।

सुखाम्भोधे स्वामी परम करुणा सिन्धु भगवन् !
रहू सेवा में मैं यह बस मुझे नाथ वरदो ।
कहीं भी होऊ मैं प्रणत हरि पूज्य प्रभुवर !
गुरो दादा नित्य चरण शरण ते भवतु मे । ८ ।

॥[श्री गुरुदेव स्तवन संग्रह]॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(तर्ज—वीर बनाने वाले तुमको लाखों प्रणाम)

दादा देव दयालु तुमको लाखों प्रणाम ।
श्री गुरुदेव दयामय तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥
मिथ्यामत का मैल मिटाकर, बोधि लाभ शुभ हमको देकर।
जैन बनाने वाले तुमको लाखों प्रणाम । दा० १ ।
नाम मंत्र की महिमा भारी, विपत्ति निवारण संपतिकारी।
योगीश्वर गुणवाले तुमको लाखों प्रणाम । दा० २ ।
युगवर सुगुणसागर उपकारी, हरि जिन शासन में जयकारी।
दर्शन देने वाले तुमको लाखों प्रणाम ।

श्री गुरुदेव स्तवन

(कव्वाला)

क्या हैं अपूर्व दर्शन, गुरुदेव जी तुम्हारे ॥
दु:ख दूर कीजिये सब, हम भक्त हैं तुम्हारे ॥ टेर ॥
गुरु के बिना जगत में, है कौन मार्ग दर्शक ।
आया शरण में स्वामी, गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ १ ॥
चिंतामणी से बढ़कर, मनइच्छितार्थ दानी ।
सानी न और जगमें, गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ २ ॥
हरि पूज्य जैन शासन, पावन प्रकाश कारी ।
चाहू सदैव दर्शन गुरुदेवजी तुम्हारे ॥ ३ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(तर्ज—जय बोलोरे पास जिनेसर की)

दर्शन दो श्री गुरुदेव हमें दर्शन दो ॥ टेर ॥
गुरु दर्शन बिन तरस रहे हम ।
दो दर्शन गुरुदेव हमें ॥ दर्शन० १ ॥

तुम पथ के हम पथिक मभी हैं।
निज पथ देव दिखा दो हमें ॥ दर्शन० २ ॥
चन्द्र चकोर मोर जिम बादल ।
तिम तुम दर्शन चाह हमें ॥ दर्शन० ३ ॥
विकसित होत कमल रवि-दर्शन ।
तिम तुम दर्शन हर्ष हमें ॥ दर्शन० ४ ॥
'हरिजिन' शासन मात प्रकाशन ।
आत्म प्रकाश दिखादो हमें ॥ दर्शन० ५ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(तर्ज—मैं बनकी चिड़िया बनकर बन २ डोलू रे)

श्री दादा गुरुका दिलमें ध्यान लगाऊँरे ।
जिनदत्त सूरी दादा गुरु के गुण गाऊँ रे ॥ टेर ॥
गुरुदत्त जगत जयकारी, शुभ नाम मंत्र सुखकारी ।
गुरुदत्त सत्य गुणधाम नित्य, निज मन मंदिर में लाऊँरे
॥ श्री

दादागुरु आप पधारो, सेवक के काज सुधारो ।
गुरु दर्श-हर्ष पावन प्रकर्ष-मैं अपने में लख पाऊँ रे ॥
॥ श्री दादा० २ ॥

गुरु सुखसागर भगवाना, हरि-सागर-सूर समाना ।
गुण भूप-रूप कारक अनूप-दर्शन दुख दूर गमाऊँ रे ॥
॥ श्री दादा० ३ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(तर्ज—आधार मेरे प्यारे पारस प्रभु है आधार)

दातार मेरे प्यारे, दादा गुरु है दातार ॥ टेर ॥
दत्त सूरीश्वर दादा गुरु हैं, कल्पतरु के अवतार ।
अवतार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ १ ॥
निपुतियों को सुपुत देते, निर्धन को धनके भंडार ।
भंडार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ २ ॥
रोगी कुरूप के रोग मिटावें, जल्दी से रूप सुधार ।
मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ ३ ॥

निर्बुद्धियों में बुद्धि प्रयोगतें, करते सुबुद्धि प्रचार।
प्रचार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ ४ ॥
सेवो सुगुरु भवी सुरगण नायक, 'हरि' करें जयकार।
जयकार मेरे प्यारे, दादा गुरु हैं दातार ॥ ५ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(सावरा सुखदाई जाकी छवि बरणी न जाइ)

[राग बसत होरी]

परम गुरु सेवा पाई, निजातम ज्योति जगाई ॥ टेर ॥
श्री जिनदत्त सूरीश्वर दादा, महिमा जिनकी सवाई।
सेवा करते सेवक जिनकी, विपदा दूर हटाई ॥
गुरु मेरे हैं वरदाई ॥ परम० १ ॥

[illegible] गिरनार पे नागदेव को, लिखदे अम्बा माई।
युगवर मरुधर सुरतरु जैसे, वांछित सुख फल
सेवे सब शीश नमाई ॥

वीर पीर अरु जोगणिया सब, जो छलने को आई ।
गुरु के प्रबल-पोम बलिहारी, देवें नित्य दुहाई ॥
गुरु जग कीर्ति अमाई ॥ परम० ६ ॥

देश देश में गुरुम विराजे, परचा प्रगट सवाई ।
सुखसागर भगवान महोदय, पूजो गुरु होके अमाई ॥
सदा गुरु होत सहाई ॥ परम० ७ ॥

॥ श्री गुरुदेव स्तवन ॥

(राग—सहाना धमाल)

श्रीजिनदत्त सूरींदा, परम गुरु श्री जिनदत्त सूरींदा ।
परम दयाल दयाकर दीजे दरशण परमानन्दा । परम० १
जङ्गम सुरतरु वांछित दायक, सेवक जन सुखकन्दा । परम० २
सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुःख ददा । परम० ३
निज पद सेवक सानिध कारी राखिये गुरु राजिन्दा । परम० ४
कर जोरी विनय युत विनवे श्रीजिन हरख सुरींदा । परम० ५

दादा कुशल गुरु स्तवन



—१—

[गजल]

कुशल करना कुशल करना, कुशल गुरुराज शासन में।
तुम्हीं हो शक्तिमय निजभक्त, विघ्नों के विनाशन में। टेर।
महा अंधेरे में सोते, निराशों अपने भक्तों को।
उठाकर आप अब जल्दी, लिवा लाओ प्रकाशन में। कु० १।
अपूरब अपनी ज्योति का, दिखावें आप अब जल्दा।
कि जिससे जोश भी फैले, हमेशा सुख तन मनमें। कु० २।
हैं भूले भक्त पर तुमको, भुलाना यों न लाजिम है।
दुआ है आपसे इतनी, बढ़ादो भक्त जन धनमें। कु० ३।
सदा "हरि" आपकी स्वामी, दया की वेल भक्तों पे
कर,छाया, हरे माया, अशान्ति हो न जीवन में।

—२—

[गज़ल]

कुशल गुरु क्यों न देते हो, कहो दर्शन मुझे अपना।
अगरचे दूर रहना था, बनाया दास क्यों अपना॥
जलीलों को जलाना ही, अगर मंजूर है तुमको।
विरुद तब दीनबन्धु का, रखा, फिर नाथ क्यों अपना॥
तुमारा मैं हुआ जब से, सदा सबसे तड़फता हूँ।
न तड़पाना तुम्हें लाजिम, शरन दो देव अब अपना॥
मुसीबत मेट दो मेरी, दरश दो क्यों करो देरी?।
गुजारिश है फकीरचन्द की, निभालो नेह बस अपना॥

—३—

(तर्ज—बोल बन्देमातरम्)

आपके दर्शन बिना गुरुवर! रहा जाता नहीं।
और दिल का हाल गैरों से कहा जाता नहीं॥
है परेशानी यही कैसे तुम्हें पाऊँ गुरो।
पथ ऐसा एक भी मेरी नजर आता नहीं॥

हैं जुदाई के जिगर में जख्म भारी हो रहे।
उनकी जलन का जोश भी मुझसे सहा जाता नहीं॥
हैं कुशल गुरु आप फिर क्यों देर इतनी हो रही।
अब और आशा में प्रभो मुझसे रहा जाता नहीं॥
'हरि'पूज्य गुरुवर दासकी अरदासको सुन लीजिये।
मुक्तिदाता आप बिन बस और मन भाता नहीं॥

-:-

[गजल]

कुशल गुरुराज जय तेरी, सदा हो भक्तिया मेरी॥ टेर॥
हृदय में ध्यान धरता हू, उपाधि दूर करता हू।
मैं गाउं कीर्तिया तेरी, कुशल गुरुराज जय तेरी॥ १॥
सदा तुझ नाम लेकर के मैं करता काम हूँ जितने।
सफल होते वही देखे, कुशल गुरुराज जय तेरी॥ २॥
हैं तेरे मंत्र की शक्ति, अजायब विश्व में रोशन।
मुझे उसका सहारा है कुशल गुरुराज जय तेरी

तुही सुख सिन्धु है भगवन् । पाप 'हरि' पूज्य उपकारी।
सहज मुक्ति वधू स्वामी, कुशल गुरुराज जय तेरी ॥ ४ ॥

॥ मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि स्तवन ॥

तुमतो भले बिराजोजी,
मणिधारी महाराज दिल्ली में भले बिराजोजी ॥ टेर ॥
नरनारी मिल मंदिर आवे, पूजा आन रचावे ।
अष्ट द्रव्य पूजा में लावे, मन वांछित फल पावे ॥ तुम० १ ॥
आशापूरो सकट चूरो, ये है बिरुद तुम्हारो ।
आधि व्याधि सब दूर नाशो, सुख सम्पत दे तारो ॥ तुम० २॥
वाद विवादे जन जय पामे, वार जलधि जहाज ।
बाट घाट भय पीड़ा भांजे, समरण श्री गुरुराज ॥ तुम० ३॥
पुत्र पुनीता परम विनीता, रूपे लक्ष्मी नार ।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पति दीजें, भल भरजो भंडार। तुम०४।
सेवक ऊपर करुणा करजो, महिर नजर तुम धरजो ।
लीला घरमें भरजो, एतो काम तुम करजो । तुम०५ ।

॥[आवश्यकीय चौदह नियम]॥



नीचे लिखे चौदह नियमों को गुरुगम से समझ कर धारण करे तो ससार के कामों को करता हुआ भी गृहस्थ सयमी होकर मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।

सचित्त १, दव्व २, विगई ३, वाणह ४, तबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७ वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बभ ११, दिसि १२, न्हाण १३, भत्तेसु १४ ॥

१—सचित्त नियम—जिसमें जीव सत्ता हो ऐसे हरे शाक, फल, फूल, कच्चा पानी, बिना पका नमक, बेरांधा अनाज आदि सचित्त वस्तुओं की सख्या का परिमाण करे।

२—दव्य नियम—जितनी चीजें मुह में डाली जाय जैसे दाल, चावल, रोटी, दांत कुचरणी आदि वस्तुएँ उनका परिमाण करे।

३—विगइ नियम—विकार को बढ़ाने वाली भोज्य सामग्री को विगइ कहते हैं। सब विगइ १० हैं। उनमें १–मधु (सहत), २–मांस, ३–मक्खन, ४ मदिरा ये चार महा विगइ तो श्रावक को त्याज्य है। १–घी, २–तेल, ३–दूध, ४–दही, ५–गुड़, ६–पक्वान्न इनका परिमाण करे।

४—उपानह नियम—जूते-मोजे स्लीपर-पावड़ी-पावड़ी आदि पैर में पहिनने की चीजों का परिमाण करे।

५—तम्बोल नियम—पान सुपारी लौंग इलायची आदि मुखवासक पदार्थों का परिमाण करे।

६—वस्त्र नियम—जो पहिरने में और ओढ़ने में आवे ऐसे वस्त्र और आभूषणों की संख्या का परिमाण करे।

७—कुसुम नियम—जो सूघने में आवे ऐसे पदार्थ फूल अत्तर सूघने की तमाखु आदि का गिनती कर परिमाण करे।

८—वाहन नियम—हाथी, घोड़ा, बैल गाड़ी,

ऊंट, मोटर, रेल, साइकिल इत्यादि की संख्या का परिमाण करे।

९—शयन नियम—शय्या बिछोना पलंग पाट कुरसी आदि की संख्या का परिमाण करे।

१०—विलेपन नियम—केशर चन्दन तेल आदि की संख्या का परिमाण करे।

११—ब्रह्मचर्य नियम—पर स्त्री का सर्वथा त्याग कर और स्व स्त्री से सुह दोरे के न्याय से तथा वाद्य विनोद का परिमाण करे। 'स्त्री' पर पुरुष का सर्वथा त्याग करे।

१२—दिशा नियम—दिशायें चार और विदिशायें चार ऊंचे और नीचे कुल मिलाकर दश दिशाओं में जाने आने के कोशों का परिमाण करे।

१३—स्नान नियम—छोटा स्नान हाथ, पैर, मुंह आदि का धोना और बड़ा स्नान सारे शरीर को धोना उसका परिमाण करे।

१४—भात नियम—अन्न पानी आदि भोजन के पदार्थों का जरूरत के मुताबिक तोल माप रखे।

॥ छह काय ॥

१—पृथ्वी काय—मिट्टी नमक आदि जो खाने व हाथ धोने आदि के काम में आवे उसका परिमाण करे।

२—अप्काय—न्हाने धोने व पीने के काम में आने वाले पानी का परिमाण करे।

३—अग्निकाय—चुल्हा-भट्ठी-चिराग-अंगीठी आदि का परिमाण करे।

४—वायुकाय—अपने हाथ से और हुक्म से जितने पखे चलाने म आवे उनका परिमाण करे।

५—वनस्पतिकाय—हरा शाक आदि का वजन और जातियों का परिमाण करे।

६—त्रसकाय—बेइन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रिय तक के जीवों को बिना अपराध वे काम मन वचन काया से

कमी नहीं मारना। अनजान से मरजाय तो "मिच्छामि दुक्कड" देना।

(तीन कर्म)

१—असि—तलवार-चाकू-छुरी कैंची-सुई इत्यादि को चलाने का परिमाण करे।

२—मसि—कागज, कलम, दावात, स्याही आदि का परिमाण करे।

३—कृषि—खेती बगीचे आदि का परिमाण करे।

ऊपर बताये हुए नियमों को प्रातःकाल म और सन्ध्या समय में दोनों समय चितार अथवा दिन रात्रि के एक साथ विचार। तीन नवकार गिनकर धारे और तीन नवकार गिनकर पारे पारते समय "अजान में अधिक लगा हो तो मिच्छामि दुक्कड और कमती लगा हो तो लाभ हो" ऐसा कहे। यह बिना कष्ट के पापों से का उपाय है। इन नियमों को स्वीकार करने से आत्मा मोक्ष में परम-शक्ति को पाती है।

॥ नवकारसी मुट्ठसी पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिय मुट्ठि सहिय पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहार असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणा भोगेण, सहसागारेण महत्तरागारेण सव्व समाहि वत्तिया गारेण वोसिरइ ।

(१)

॥ विगय पच्चक्खाण ॥

विगई ओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेण सहसा गारेण, महत्तरा गारेण सव्वसमाहि वत्तियागारेण वोसिरइ ।

(२)

॥ देशावकासिक पच्चक्खाण ॥

देसावगासियं भोगं परि भोगं अन्नत्थणाभोगेण सहसा गारेण महत्तरागारेण सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

१—इस पच्चक्खाण को करने वाला यथा शक्ति विगय छोड़े।

नियम चितारने वाला यह पच्चक्खाण करे ।

॥ आवश्यक विधि समाप्त ॥